मनोज चित्र कथा
मूल्य 5.00
राम-रहीम और खूनी समुद्र
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज कॉमिक्स

राम-रहीम और खूनी समुद्र

(डबल सीक्रेट एजेण्ट 00½ राम-रहीम)

लेखक : बिमल चटर्जी ■ चित्रांकन : दिलीप कदम, विजय कदम, त्रिशूल कॉमिक आर्ट्स

मि. एक्स ने अगले ही दिन बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से राम-रहीम को एक खास जगह पहुंचने के लिए कहा और जब राम-रहीम ने वहां जाने के लिए एक टैक्सी पकड़ी तो मि. एक्स ने हैलीकॉप्टर की मदद से उनकी टैक्सी ही उठवा ली...

राम-रहीम एक मुसीबत में तो फंसे ही थे। दूसरी मुसीबत के रूप में एक विशालकाय ह्वेल मछली उनकी डूबी टैक्सी पर टूट पड़ी।
कड़-कड़।
उफ।
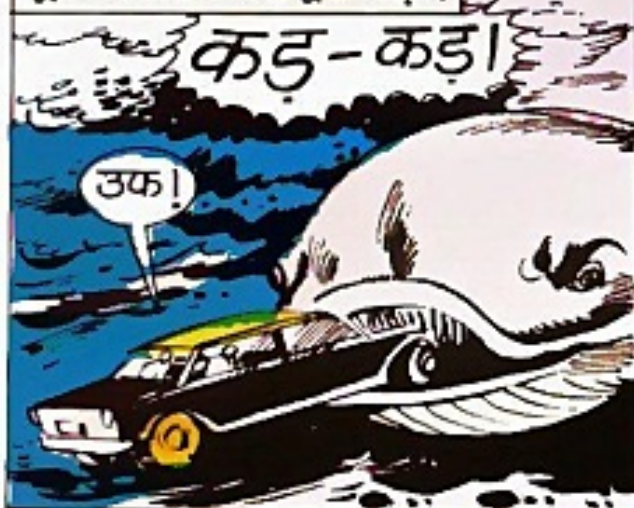
अब यह राम-रहीम का भाग्य था कि उस टैक्सी में मि. एक्स ने पहले से ही एक टाइम बम फिट करवा रखा था। वह ठीक उसी समय फट गया।
धड़ाम!

इस तरह ह्वेल मछली और टैक्सी की कैद से राम-रहीम को छुटकारा मिल गया।
चलो, अब किनारे की तरफ तैरना शुरू करो। इसके अलावा कोई चारा नहीं है।

एक बार फिर राम-रहीम को सौभाग्य से एक स्टीमर में लिफ्ट मिल गई।

लेकिन राम-रहीम के दुर्भाग्य से वह स्टीमर मि. एक्स के ही आदमियों का था। उन्होंने उन्हें कॉफी में बेहोशी की दवा पिलवाकर...

... मि. एक्स के अड्डे पर पहुंचवा दिया।
हा-हा-हा! अब मैं इन्हें मारूंगा नहीं, बल्कि जीवित अपने देश ले जाऊंगा।

राम-रहीम किसी तरह दुश्मनों के बंधन से बंधनमुक्त हुए और उनसे मुकाबला किया।
धांय-धांय!
तड़... तड़... तड़

परन्तु, आखिर में वांग-ली और मि. एक्स राम-रहीम को बेहोश करने में सफल हो गये।
मि. एक्स, अब इन दोनों को मेरे जहाज तक पहुंचाना तुम्हारा काम है।
ठीक है।

एक्स ने उसी शाम राम-रहीम को वांग-ली के जहाज में पहुंचा दिया।

लेकिन राम-रहीम ने वहां भी खाना देने आये दोनों गार्डों को बेहोश कर दिया...
खटाक्
आह!
गड़प-गड़प!

...और केबिन से बाहर निकलकर उन्होंने बड़ी ही चुस्ती-फुर्ती के साथ एक अन्य पहरेदार को अपने काबू में कर उससे जहाज के बारे में सारी जानकारी हासिल कर ली।
शाबाश! अब यह बताओ कि ट्रांसमीटर रूम किधर है?
वह यहीं, आगे छः केबिन छोड़कर है।
यहां तक की कहानी आप पिछले दो अंकों "राम-रहीम और कत्ल का अभियान" व "राम-रहीम और तबाही और मौत" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।

सारी जानकारी हासिल करने के बाद–
चलो, सबसे पहले हमें ट्रांसमीटर रूम में ले चलो।
हां, मैं तैयार हूं।

याद रखना कुत्ते, यदि तुमने हमसे कोई चाल चलने की कोशिश की तो मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा।
नहीं-नहीं, मैं तुमसे कोई धोखा नहीं करूंगा।

वह गार्ड राम-रहीम को ट्रांसमीटर रूम में ले गया। वहां से ट्रांसमीटर द्वारा राम ने चीफ मुखर्जी को सारी स्थिति की सूचना दे दी।
तुम चिंता मत करो। मैं स्वयं सैनिक मदद लेकर वहां पहुंच रहा हूं। ओवर एण्ड आल।

उसके बाद राम-रहीम गार्ड के साथ जहाज के बारूदखाने में पहुंचे।
रहीम, टाइम बम उठा लो। इन्हें हम जहाज़ के महत्वपूर्ण स्थानों पर सैट करेंगे।
राम भइया! तो क्या तुम इन सबको जहाज के साथ मौत के घाट उतारना चाहते हो।

फिर राम-रहीम ने मिलकर समय सैट करके टाइम बम बारूदखाने समेत जहाज के कई महत्त्वपूर्ण स्थानों पर फिट कर दिये।

अन्त में—

तुम्हारी मदद का बहुत-बहुत शुक्रिया गार्ड। लेकिन अफसोस कि हम तुम्हें भी होशोहवास में नहीं छोड़ सकते।

नहीं-नहीं, मुझे मत मारो।

हम तुम्हें मारेंगे नहीं, सिर्फ बेहोश करेंगे।
आह!
खटाक्!
आओ, अब दूसरों को मजा चखाने के साथ-साथ यहां से निकलने का भी प्रयास करें।
ठीक है, चलो।
उधर एक शानदार केबिन में—
हा-हा-हा! आखिरकार हम अपने मिशन में कामयाब हो ही गये मेजर! सुबह तक हम तुम्हारे देश में पहुंच जायेंगे।
ठीक कहते हो। मैं राम-रहीम की गिरफ्तारी से बहुत खुश हूं। इसके लिये मैं अपनी सरकार से तुम्हें तगड़ा इनाम दिलवाऊंगा।
तभी—
गजब हो गया सर! गजब हो गया।
क्यों, क्या हुआ?
हिन्दुस्तानी लड़ाकू जहाज हमें तीन ओर से घेरते हुए आगे बढ़ रहे हैं।
क्या बकते हो?

Varun N Anubhav

सर, वे दोनों हिन्दुस्तानी छोकरे केबिन से गायब हैं और हमारे गार्ड बेहोश पड़े हैं।
क्याऽऽऽ?
उफ! सब गुड़-गोबर हो गया मेजर! अब मुझे विश्वास हो गया कि यह सब मुसीबत उन्हीं दोनों की लाई हुई है।

यदि हम मरेंगे तो वे दोनों कुत्ते भी जिंदा नहीं बचेंगे...
...भारतीय फौजों से तो मैं बाद में निपटूंगा, पहले मुझे उन दोनों से ही निपटना है।

वे दोनों छोकरे अभी जहाज में ही होंगे, उन्हें ढूंढो और देखते ही गोली मार दो।
यस सर!

तभी –
तड़-तड़-तड़!
अरे, यह गोलियों की आवाज कैसी ?

जरूर वे दोनों छोकरे ही होंगे।
ओह! आओ, हम देखते हैं उन्हें। अब वे मेरे हाथों जिंदा नहीं बचेंगे।

उधर –
तड़-तड़-तड़!
ई...ई...ई...!
उफ!
आह!
ठ...ठ...ठ...!

वे रहे राम-रहीम!
अभी खत्म किये देता हूं कुत्तों को।

धांय-धांय!

परन्तु वांग-ली के निशाने से राम-रहीम बाल-बाल बच गये।

हुम्म! तो आ गये दोनों कुत्ते मरने के लिए।
रहीम! फायर!
तड़-तड़-तड़!

तड़-तड़-तड़!
ठ-ठ-ठ!
उफ!
आह!
ई...ई...ई..!

पलक झपकते ही वांग-ली और एक्स हमेशा-हमेशा के लिए गहरी नींद सो गये।

रहीम, टाइम बम फटने में चंद मिनट ही शेष रह गये हैं। अब और कोई चारा नहीं, समुद्र में कूद पड़ो और जितनी जल्दी हो सके जहाज से दूर हट जाओ।

फिर दोनों फायरिंग करते हुए रेलिंग की ओर हटने लगे।
तड़-तड़-तड़!
ठ-ठ-ठ!
आह!
उफ!

और रेलिंग के निकट पहुंचते ही–
कूद जाओ रहीम!
तड़-तड़-तड़-!

छपाक!
छपाक!

धांय-धांय!
तड़-तड़-तड़-!

ठहरो दोस्तो, क्यों बेकार अपनी गोलियां खराब करते हो! उन दोनों ने तो समुद्र में कूदकर खुद समुद्री जीवों को अपने मांस की दावत दे डाली है। अब समुद्री जीव उनसे स्वयं निपट लेंगे। आओ, हम दुश्मन सैनिकों का मुकाबला करने की तैयारी करते हैं।
ठीक है, चलो।

इधर राम-रहीम पानी में कूदने के साथ ही एक बार तो काफी गहराई में उतरते चले गये...

...लेकिन कुछ देर बाद फिर उन्होंने ऊपर आकर पानी से सिर उभारा।
अरे, उन लोगों ने इतनी जल्दी हमारा पीछा छोड़ दिया!

मेरे विचार से उन लोगों ने यह सोचकर हमारा पीछा छोड़ दिया होगा कि हम वैसे ही समुद्री जीवों का आहार बन जायेंगे...

...फिर हमारे युद्ध पोतों ने उन्हें घेर जो लिया है। उनसे भी तो उन्हें मुकाबला करना है!
च-च-च! बेचारे, मुकाबला करने से पहले ही ढेर हो जायेंगे।

उन बेचारों की चिंता छोड़ो रहीम और अपनी चिंता करो। कहीं उन बेचारों के साथ-साथ हम भी ढेर न हो जायें। चलो, जितनी जल्दी हो सके तैरकर जहाज से दूर हट जायें, बम फटने ही वाले होंगे।
ओह! मैं तो टाइम बमों के बारे में भूल ही गया था। चलो।

दोनों जल्दी से तैरते हुए जहाज से दूर होने लगे।

और कुछ ही देर बाद –
धुड़म् धड़ाम्!

धड़ाम्-भड़ाम्

दुश्मनों का युद्ध पोत तबाह हो गया। उसमें शायद ही कोई जिंदा बचा होगा।
और अगर जिंदा होगा भी तो मर जायेगा।

उधर जब भारतीय युद्ध पोतों ने भयानक विस्फोटों के साथ उस जहाज के पर खचे उड़ते देखे तो वे हैरान हो उठे।
अरे, यह क्या हुआ?
क्या दुश्मनों ने अपने आपको चारों तरफ से घिरा पाकर स्वयं ही अपने आपको जहाज समेत नष्ट कर लिया है?
हमें सूचना मिली थी कि उस जहाज में राम-रहीम नाम के दो लड़के भी हैं। कहीं वे भी... ओ..नो... ऐसा हुआ तो गजब हो जायेगा।
अन्य जहाजों के अधिकारी भी चिंतित थे।
ठहरो, मैं सारी स्थिति की सूचना हैडक्वार्टर भेजता हूं। फिर वहां से जैसा आदेश मिलेगा वैसा ही करेंगे।
हैडक्वार्टर में सूचना देने पर सभी जहाजों को आदेश मिला।
दुश्मनों के जहाज को राम-रहीम ने नष्ट किया है और जरूर उन्होंने उसके नष्ट होने से पहले वह जहाज छोड़ दिया होगा। उन्हें पानी में तलाश करो।

तुरन्त सभी जहाजों ने राम-रहीम की खोजबीन आरम्भ कर दी। उसी समय एक भारतीय फौजी हैलीकॉप्टर भी आकाश में मंडराया।
घर्र-र्र-र्र!
उस हैलीकॉप्टर पर स्वयं चीफ मुखर्जी थे।
उन होनहार लड़कों ने दुश्मनों के पोत को तो नष्ट कर दिया, लेकिन वह स्वयं कहां हैं?
पायलट, हैलीकॉप्टर को और आगे ले चलो।
यस सर!
इधर राम-रहीम तैरते हुए एक भारतीय पोत की ओर बढ़ रहे थे।
राम भइया! वो देखो, एक हैलीकॉप्टर हमारी ही ओर आ रहा है।
शायद! उन्हें हमारी ही खोज होगी।
घर्र-र्र-र्र!
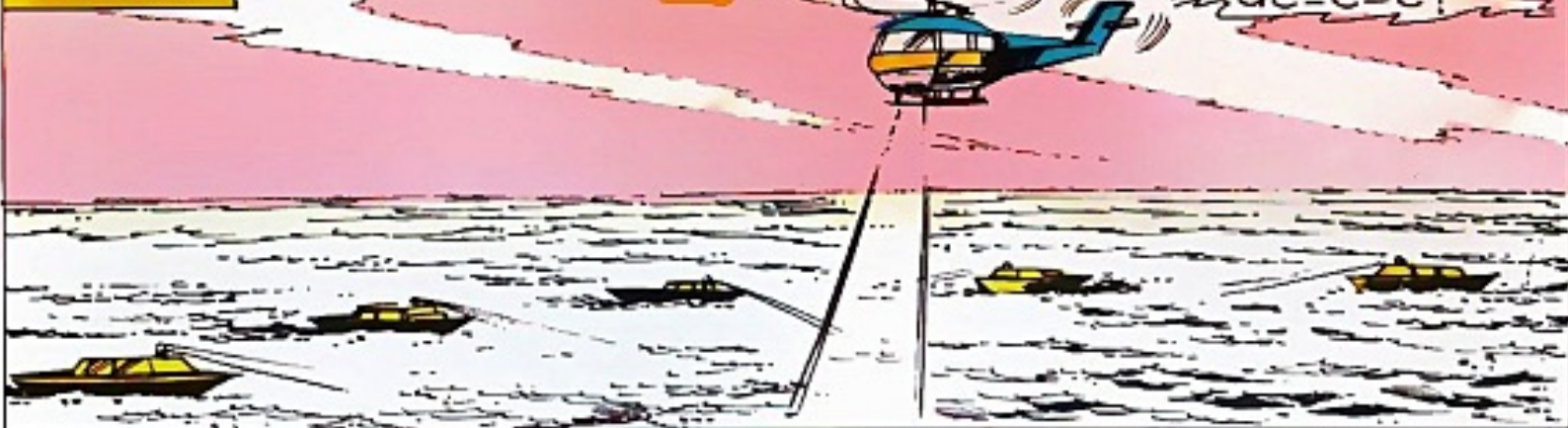
जल्दी ही हैलीकॉप्टर राम-रहीम के ऊपर पहुंच गया।

सर, वह देखिये, दो व्यक्ति!

आह! वे राम-रहीम ही हैं...

...हैलीकॉप्टर को और नीचे ले चलो।

यस सर!

जब हैलीकॉप्टर काफी नीचे हो गया।

राम-रहीम, मैं तुम्हारा अंकल मुखर्जी हूं। तुम दोनों ठीक तो हो ना।

देखते ही देखते भारत के चार पोत आश्चर्यजनक तरीके से नष्ट हो गये। फिर —

सावधान, नीचे दुश्मनों की पनडुब्बी है और वही हमारे जहाजों पर आक्रमण कर रही है।

जवाबी कार्यवाही करो।

राम भइया, तुम्हारी समझ में आया कि हमारे जहाज यकायक कैसे नष्ट हो गये?
जरूर हमारे आस-पास कोई भयानक खतरा उपस्थित है।

लेकिन हमारे आस-पास तो कोई दुश्मन नहीं है।
दुश्मन आस-पास नहीं, बल्कि पानी के नीचे है।

यानी तुम्हारे कहने का मतलब है पनडुब्बी?
हां, सावधान हो जाओ। हो सकता है, वह हम पर भी आक्रमण करे।

बाप रे, फिर तो गजब हो जायेगा।

वे रहे, वे दोनों हिन्दुस्तानी छोकरे।
सालों को पकड़कर नीचे खींच लो, लेकिन ध्यान रहे, वे मरने नहीं चाहिए।

समझ गये। उन्हें पानी के भीतर खींचते ही हमें उनके मुंह पर ऑक्सीजन मास्क चढ़ा देना है।

क्या हुआ राम-रहीम, रुक क्यों गये? जल्दी से सीढ़ी पकड़कर ऊपर आ जाओ।

चीफ, खतरा! गड़प – गड़प!

देखते ही देखते राम-रहीम पानी के भीतर समा गये।
राम-रहीम ऽऽऽ!

उफ! क्या हुआ उन्हें ?

सर, वे अचानक सीढ़ी पकड़ते-पकड़ते डूब कैसे गये ?
वे डूबे नहीं, जरूर उनके साथ कोई घटना पेश आई है। तुम इस मिशन के कमाण्डर इन चीफ राजप्रिय से कहो कि वे उस स्थान पर गोताखोरों को उतारें...

...और समुद्र के आस-पास का चप्पा-चप्पा छान मारें। राम-रहीम हर हालत में मिलने चाहिए, वह भी जिंदा। जल्दी करो।
यस सर!

अगले ही पल पायलट युध्द पोत के कमाण्डर से सम्बन्ध साधने लगा।
हैलो-हैलो! कमाण्डर इन चीफ!

सम्पर्क स्थापित होते ही पायलट ने कमाण्डर इन चीफ को चीफ मुखर्जी का निर्देश सुना दिया।
ठीक है। मैं अभी गोताखोरों को उन्हें ढूंढ़ने का आदेश देता हूं।
जल्दी ही एक जहाज उस स्थान पर पहुंचा, जहां राम-रहीम पानी में समाये थे और उसमें से दसियों निपुण गोताखोरों ने पानी में छलांग लगा दी।
घर्र-घर्र-र्र!
वे गोताखोर चारों तरफ फैलकर राम-रहीम की तलाश करने लगे।
जबकि समुद्र से उभरने वाले गोताखोर मानव, राम-रहीम को पकड़े तेजी से एक तरफ बढ़े चले जा रहे थे।
शाबाश! हमारी पनडुब्बी नजदीक ही है, जरा और तेजी दिखाओ।
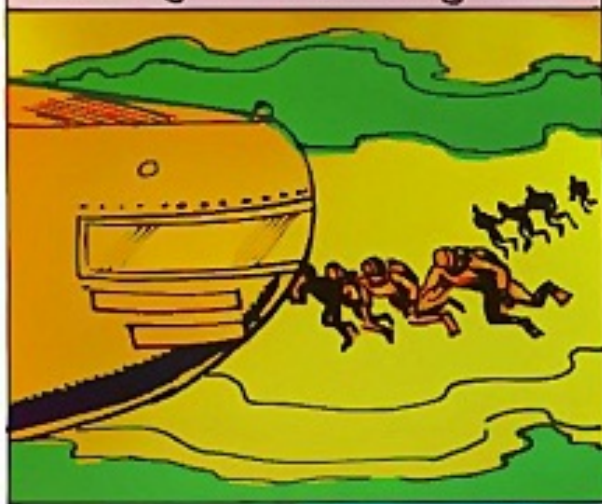
इधर भारतीय गोताखोर लगभग दो घण्टे तक समुद्र को खंगोलते रहे, लेकिन असफल रहे।

हमने बहुत खोजबीन की सर, लेकिन उन दोनों लड़कों का कहीं पता नहीं चला...

उधर पनडुब्बी के भीतर एक लम्बे-चौड़े केबिन में—
हा-हा-हा! आखिरकार तुम दोनों एक बार फिर हमारे कब्जे में आ ही गये।
तो तुम भी मेजर वांग-ली के साथी हो। वह कुत्ता, जो मि. एक्स के साथ ही हमारे हाथों मारा गया है।
खामोश!
मैं तुमसे अपने हरेक आदमी की मौत और तबाही का बदला लूंगा हरामजादो, वरना मेरा भी नाम कमाण्डर चुंग-ची नहीं।
कमाण्डर, अपने आदमियों की मौत का बदला लेने से पहले कम से कम यह तो बता दीजिए...
...कि हम दोनों वांग-ली के कब्जे से आपके कब्जे में कैसे पहुंच गये।
हा-हा-हा...
...यह भी मेरी बुद्धिमता का एक प्रमाण है। जब वांग-ली ने हमें यह सूचना भेजी कि वह तुम्हें जिंदा अपने देश लेकर आ रहा है...

... तो मेरा माथा ठनकने लगा कि तुम दोनों कहीं जहाज में भी कोई गड़बड़ न कर बैठो। क्योंकि मैं तुम दोनों की नस-नस से वाकिफ हूं...
... इसलिए मैंने गुप्त रूप से वांग-ली के जहाज की निगरानी करने का फैसला किया...
तभी एक-दो भयानक धमाकों के साथ पनडुब्बी बुरी तरह हिल उठी।
ओह! यह क्या हुआ?
हा-हा-हा! अभी क्या हुआ है कमाण्डर, होगा तो अब। मुझे लगता है, हमारे युद्ध पोतों ने तुम्हारी पनडुब्बी को अपने राडार स्क्रीन पर देख लिया है...

हा-हा-हा! मैं नहीं कहता था कमाण्डर कि यह धमाके हमारे ही युद्ध पोतों के आक्रमण से हो रहे हैं।

यदि ऐसी बात है तो मैं तुम्हारे देश के युद्ध पोतों की धज्जियां उड़ा दूंगा...
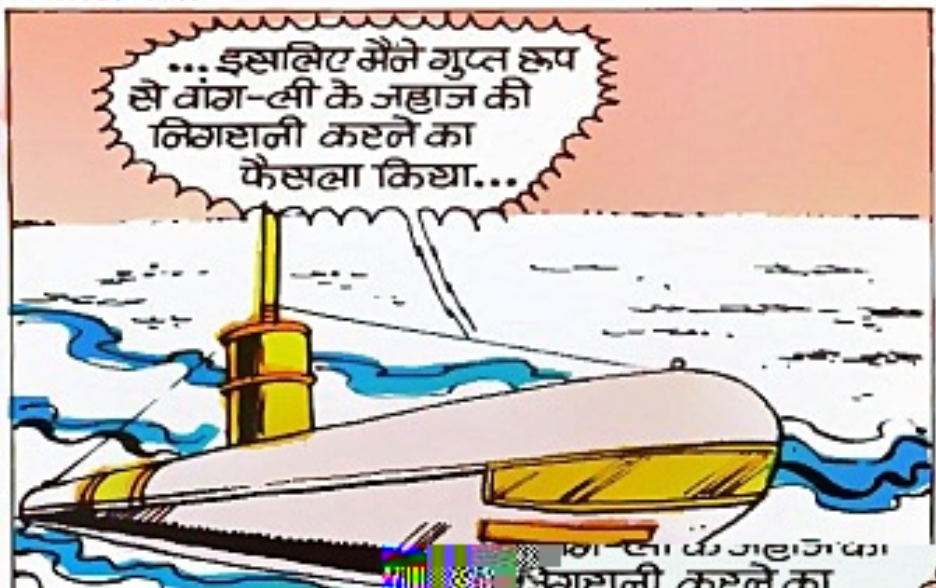
...तुम दोनों भी मेरे साथ कंट्रोल रूम में चलो। वहां तुम स्वयं अपनी आंखों से अपने देश के युद्ध पोतों की तबाही और बरबादी देख लेना।

कमाण्डर राम-रहीम को लेकर पनडुब्बी के कन्ट्रोल रूम में पहुंचा, जहां कई टी.वी. स्क्रीन प्रकाशमान थे और उन पर समुद्र के ऊपर का दृश्य उभरा हुआ था।

राम का कहना ठीक ही था। भारतीय युद्ध पोतों ने दुश्मनों की पनडुब्बी को अपने राडार स्क्रीन पर कैच कर लिया था और यह आक्रमण उसी का परिणाम था।
कड़-कड़-कड़!
धुड़ूम
धड़ाम
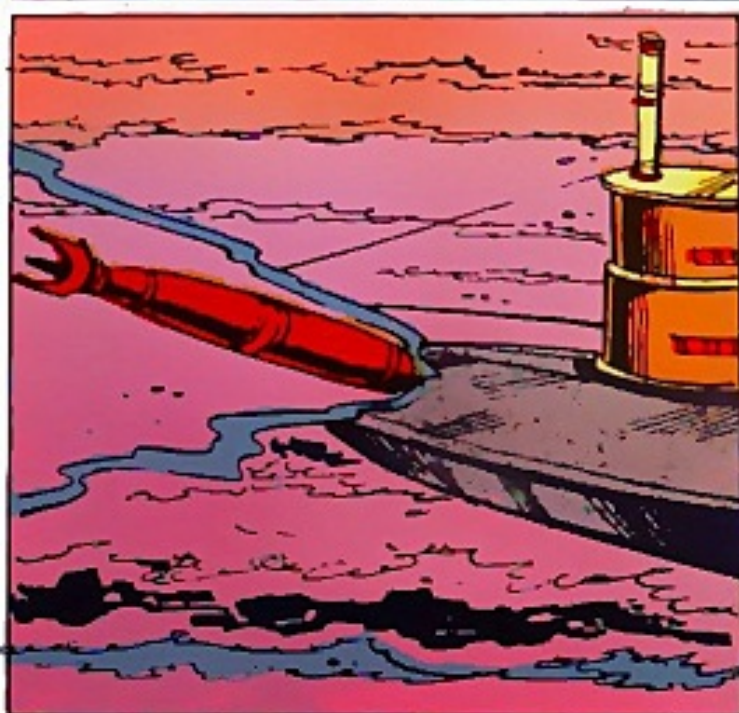
धड़ाम! धड़ाम!

धड़ाम

धड़ाम!

पलक झपकते ही भारत के तीन युद्ध पोतों का समुद्र की छाती से नामोनिशान तक मिट गया।

अपने युद्ध पोतों की विनाश लीला देखकर राम-रहीम की आंखों में खून उतर आया, जबकि कमाण्डर भयानक ठहाके लगा रहा था।
धड़ाम!
हा-हा-हा!
सबको टी.वी. स्क्रीन की ओर आकर्षित देख अचानक राम-रहीम के मध्य आंखों ही आंखों में कोई इशारा हुआ और अगले ही पल-
कड़ाक!
उफ!
धड़ाक!
आह!
फिर इससे पहले कि वहां मौजूद गार्ड्स संभल पाते, राम-रहीम ने बड़ी फुर्ती के साथ उनकी गन झपट ली।
आह!
ई...ई...ई!
और गन हाथ में आते ही-
तड़-तड़-तड़!
ठ-ठ-ठ!
आई...ई...!
उफ!
आह!

सारे गार्डों को समाप्त करने के पश्चात् राम-रहीम ने कमाण्डर को भी नहीं बख्शा।
तड़-तड़-तड़!
आई-ई-ई!
उसके बाद –
कर्नल, यदि तुम्हें अपनी ज़िंदगी प्यारी है तो चुपचाप और जल्दी से पनडुब्बी को ऊपर ले चलो, वरना...।
नहीं – नहीं, मुझे मत मारो। जैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूंगा।
तो चलो, जल्दी से पनडुब्बी को ऊपर ले चलो। साथ ही पनडुब्बी में मौजूद अपने तमाम आदमियों को आदेश दो कि यदि उन्हें अपनी जान प्यारी है तो वे भारतीय फोर्स के आगे आत्म-समर्पण कर दें।
ठीक है।
कर्नल ने राम के आदेश का पालन किया और पनडुब्बी को पानी की सतह पर ले आया। पनडुब्बी के ऊपर आते ही भारतीय युद्ध पोतों ने उसे चारों ओर से घेर लिया...
... राम-रहीम पनडुब्बी का ऊपरी द्वार खोलकर कर्नल के साथ पनडुब्बी के सबसे ऊपर गुम्बद में पहुंच गये।
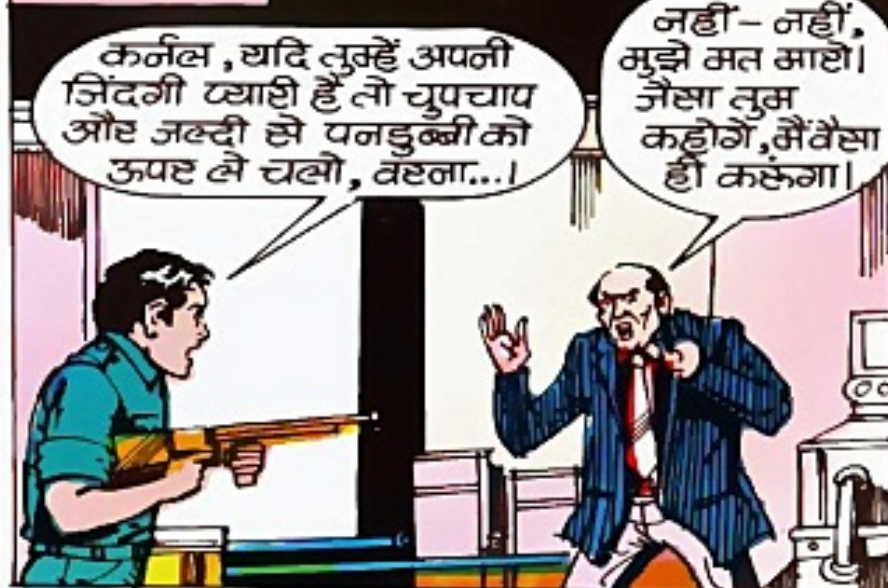
और शीघ्र ही भारतीय सेना पनडुब्बी पर चढ़ आई। कर्नल समेत दुश्मन सैनिकों ने कोई विरोध न कर आत्मसमर्पण कर दिया।
राम भइया! एक बार फिर हमने किला फतह कर लिया।
हां, इस विजय की इतनी जल्दी उम्मीद नहीं थी।

लो, चीफ मुखर्जी भी आ पहुंचे।
घर्र-हि-ह!

चीफ मुखर्जी ने तुरन्त नीचे सीढ़ियां लटकाकर...

...राम-रहीम को ऊपर हैलीकॉप्टर में ले लिया।
तुम अंदाजा नहीं लगा सकते बच्चो कि तुम्हें सकुशल देखकर मुझे कितनी खुशी हो रही है।

और जब राम-रहीम ने उन्हें सारी कहानी सुनाई तो उनका मस्तक गर्व से तन गया।
तुम धन्य हो भारत मां के सपूतो। भारत तुम्हारे इस महान् कारनामे को युगों-युगों तक याद रखेगा।
समाप्त